IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सच्चा मनुष्य वही है जो समर्पित करे आत्मा को : सुब्रह्मण्य भारती

डॉ. नीरजा गुर्रमकोंडा
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास
टी.नगर, चेन्नै – 600017

राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती का स्थान भारतीय साहित्य में अप्रतिम और अग्रणी है। भारती न सिर्फ तमिल साहित्य की आधुनिक काव्यधारा के अग्रदूत थे, बल्कि 20 वीं सदी में भारतीय जीवन और साहित्य में जो पुनर्जागरण की लहर उभरी, उसमें वे राष्ट्रीय चेतना के अमर गायक के रूप में उभरे। उनके संपूर्ण साहित्य का मूल स्वर जनजागृति और राष्ट्रीय चेतना है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, वीरेशलिंगम पंतुलु, रवींद्रनाथ ठाकुर, पी. बी. शेली जैसे अनेक युगांतरकारी साहित्यकारों से भारती की तुलना की जा सकती है।

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म 11 दिसंबर, 1882 को तिरुनलवेली जिले के एट्टयपुरम में हुआ था। साहित्यकारों और कलाकारों को वहाँ के राजा आश्रय देते थे। भारती के पिता चिन्नस्वामी अय्यर इसी दरबार में साहित्यकार के रूप में सम्मान पाते थे। अतः सुब्रह्मण्य भी राजदरबार में जाते थे। अपनी माता लक्ष्मी अम्माल से उन्होंने स्त्रियों का सम्मान करना सीखा तथा पिता से राष्ट्रप्रेम। बचपन में सब उन्हें प्यार से सुब्बय्या कहकर पुकारते थे।

सुब्बय्या की आरंभिक शिक्षा-दीक्षा तमिलनाडु में हुई। पिताजी के आदेश पर अंग्रेजी की उच्च शिक्षा पाने के लिए तिरुनलवेली गए, लेकिन उन्होंने अंग्रेजी का अध्ययन कभी भी मन लगाकर नहीं किया। हाँ, पिताजी की आज्ञा का पालन करके अंग्रेजी सीख ज़रूर ली थी। इसके संबंध में उनका कहना है कि 'मेरे पिता ने आदेश दिया कि में नेल्लई में विदेशी ज्ञान प्राप्त करूँ। यह वैसा ही था जैसे किसी शेर के बच्चे को घास दी जा रहे हो।' (नंदकुमार प्रेम, सुब्रह्मण्य भारती, पृ.6)। बाद में उच्च शिक्षा के लिए वे वाराणसी गए। स्कूल की नियमित शिक्षा में कभी भी उनका मन नहीं रमा। अधिकतर वे खेलकूद में ही समय व्यतीत करते थे। 1901 तक वाराणसी प्रवास के बाद वे पुनः तमिलनाडु वापस आए। 1908 में पांडिचेरी गए। उस समय वहाँ फ्रांसीसियों का राज्य था। उस प्रवास के दौरान भारती के जीवन में अनेक क्रांतिकारी घटनाएँ घटीं। उस समय भारती ने 'जयम उनदु' (विजय तुम्हारी) शीर्षक कविता की रचना की –

'भयभीत मत हो, मन, विजय निश्चित है
स्वतंत्रता हमारी है, इसी क्षण से, यहीं से,
मेरे हृदय में शक्तिशाली माँ का निवास है
भक्ति के वृक्ष में अमृतफल लगेंगे।
हमारे कंधे, पहाड़ से ऊँचे हैं
वे ढोते हैं माँ के सुनहले चरण
आवेग, कर्म और विचार
सब उसी के हैं
यहाँ धर्म भी है और शक्ति भी।'

बाल्यावस्था में ही अर्थात 5 वर्ष की उम्र में ही सुब्बय्या को माता से बिछड़ना पड़ा। यह क्षति अपूरणीय थी। अतः वे ज्यादातर एकांत में ही समय बिताते थे। परिणामस्वरूप वे प्रकृति के निकट हुए। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनके बाल मन पर पड़ा। उनकी रचनाओं में प्रकृति अनेक रूपों में विद्यमान है। प्रकृति के बहाने वे मानव मन की प्रशंसा करते हुए कहते हैं –

'चाँदनी, तारे और हवा को
अपने सामने रख कर, हम
पीते हैं उनका मधु
और जकड़ लेता है हमें
एक काव्यात्मक उन्माद।
वह आणविक वस्तु जो मन है
हम उसे छोड़ देंगे मुक्त विचरने के लिए।
किसी स्वादिष्ट फल में बंदी मधुमक्खी
गाती है तो
किसी को अचरज क्यों?
मन तू अभी चला जा
तारों के मुक्ता-झुंड में शामिल होने के लिए।'

एट्टयपुरम के महाराज ने भारती को अपने राज दरबार में स्थान दिया था। एक दिन एट्टयपुरम के राज दरबार में उपस्थित विद्वानों को चुनौती देने वाले शत्रु देश के दरबारी की चुनौती सुब्बय्या ने स्वीकार की। उन्होंने अपनी शैली में भाषण दिया जो विनोद से भरा हुआ था। सुब्बय्या की बुद्धिमत्ता को देखकर एट्टयपुरम के राजा ने उन्हें 'भारती' की उपाधि दी। 'भारती' अर्थात ज्ञान की देवी – माँ सरस्वती। इस घटना के बाद वे 'भारती' बने। आज इसी नाम से ही उनकी चर्चा होती है।

सुब्बय्या का विवाह चेलम्माल के साथ बचपन में ही संपन्न हुआ। भले ही उस समय उन्होंने पिता के आदेश से बाल विवाह किया, पर वे इस तरह के विवाह को प्रोत्साहित नहीं करते। अपनी आत्मकथा में उन्होंने यह लिखा कि जब उनका ज्ञान विकसित हुआ तब उन्होंने यह महसूस किया कि उनके दो स्वामी थे। एक प्यार और दूसरा कर्तव्य। इन दोनों के बीच के संघर्ष के कारण भारती के रचनात्मक लेखन और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संघर्ष होना स्वाभाविक था। लेकिन उन्होंने इन स्थितियों पर भी विजय पा ली।

किशोरावस्था मैं, 14वें वर्ष में पदार्पण करते ही भारती के सिर से पिता की छाया भी उठ गई। अभावों की जिंदगी जीने के लिए वे अभिशप्त हुए। इसका उल्लेख उन्होंने अपनी कविता 'धन की महिमा' में किया है। पिता की मृत्यु के बाद भारती अपने चाचा-चाची के पास बनारस चले गए। बनारस प्रवास के समय वे अंग्रेजी कविता के प्रति खूब आकर्षित हुए। इसके सहारे वे काव्य संबंधी परंपरागत दृष्टिकोण और उसकी सीमाओं को समझ सके। इसके साथ ही वे उन्होंने परंपरागत सीमाओं को तोड़कर नए क्षितिज की तलाश की। वे तमिल काव्य को भारी भरकम शब्दावली से मुक्त करना चाहते थे। अतः उन्होंने इस परंपरागत काव्य रूढ़ि को तोड़ा। भारती ने शेक्सपीयर, बायरन, शेली और कीट्स का गहरा अध्ययन किया था। शेली से अत्यंत प्रभावित भारती 'शेल्लीदासन' (शेली का दास) उपनाम से लिखने लगे।

बचपन से ही भारती स्त्रियों का आदर व सम्मान करते थे। एक राजनैतिक समारोह में सिस्टर निवेदिता ने जब भारती से पूछा कि वे अपनी पत्नी को क्यों साथ में नहीं लाए तो उन्होंने जवाब दिया कि उनके परिवार में पत्नियों को सार्वजनिक स्थलों में ले जाने की परंपरा नहीं है। इस बात पर सिस्टर निवेदिता ने कहा, 'समाज का आधा वर्ग यदि शेष आधे वर्ग को गुलाम बनाए रखता है, तो वह कैसे स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है!' इन बातों से प्रभावित भारती उनकी स्मृति में लिखते हैं कि

'माता निवेदिता!
तू एक मंदिर है प्यार का
सूर्य है, जो मेरी आत्मा के
अंधकार को नष्ट करता है-
तू वर्षा है
हमारे जीवन की सूखी धरती के लिए
तू भटके और निराश लोगों की
मददगार है
महानता के प्रति समर्पित

तू दिव्य सत्य की चिनगारी है
तुझे मेरा नमन।'

उन्होंने 'स्वदेश गीतंगल' (स्वदेश के गीत, 1907) तथा 'जन्मभूमि' (1909) काव्य संग्रहों को सिस्टर निवेदिता को समर्पित किया। 'स्वदेश गीतंगल' (स्वदेश के गीत) में कुल 14 गीत संग्रहीत हैं। प्राक्कथन में कवि ने यह स्पष्ट किया कि ये पुष्प उस भारतमाता के चरणों में समर्पित हैं जो शक्ति और एकता के प्रतीक हैं। 'जन्मभूमि' के प्राक्कथन में भी उन्होंने इसी बात कि पुष्टि की कि माता के चरणों में समर्पित करने के लिए कुछ और फूल लाए हैं।

भारती के मन में बचपन से ही देश के प्रति अपार प्रेम विद्यमान था। इसी कारण उनकी अधिकांश कविताओं में देशभक्ति की भावना को देखा जा सकता है। गांधी जी से मिलने से पहले तक भारती उग्र और सशस्त्र क्रांति की भावनाओं से ओत-प्रोत थे। परंतु गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के संदेश से उग्र-पंथी भारती पराजित हो गए। महात्मा गांधी को संबोधित एक कविता में उन्होंने लिखा-

'स्वतंत्रता की उस धार्मिक राह के वास्तविक मूल्य
का अनुभव करके
(जिसे महान उपदेशकों और त्यागियों ने दिखाया था)
तुमने युद्ध और हत्या के तरीके को खत्म किया
सत्याग्रह के नए रास्ते के अनुकूल परिणामों का आभास
तुम्हें हुआ था
हम भूल जाएँ अब तक के सारे अत्याचार
और धरती पर सूर्योदय हो न्याय के जीवन का।'

भारती के 'वन्देमातरम्' और 'जयभारत' उन मंत्रों के समान हैं जिन्हें जंजीरों में जकड़े वीर सैनिको ने अपनी पूरी शक्ति के साथ गाया था -

'नमन तुम्हें हम करते माता
विजयी माता।/ नमन तुम्हें ..
मन से पीड़ित/ तन से जर्जर
चिल्लाते हैं देशभक्त
अब भी मन की गहराई से
नमन तुम्हें करते माता।
विजय हमारी हो, हम
हारें या मर जाएँ
खड़े एकजुट हम सस्वर
आवाज उठाते, गाते
नमन तुम्हें हम करते माता।' (वन्देमातरम्)।

बंकिमचंद्र चटर्जी ने 'आनंदमठ' उपन्यास में भारतमाता की प्रार्थना जोड़ दी थी जिसकी पहली पंक्ति थी 'वन्देमातारम्'। यह बंगाल विभाजन के विरुद्ध होने वाले आंदोलन के दौरान बहुत लोकप्रिय हुई थी। भारती ने तमिलवासियों के मन में बलिदान के सहारे देशभक्ति को जगाकर मन-मंदिर में उस प्रतिमा को प्रतिष्ठित करने का दायित्व लिया और देशभक्ति के गीत रच डाले।

भारत विविधताओं का देश है। फिर भी यहाँ के निवासी एक तत्व से जुड़े हुए हैं और वह है 'भारतीयता'। 'विभिन्नता में एकता' को भारती ने इस प्रकार दर्शाया है -

'उसका हृदय एक है
लेकिन चेहरे तीस करोड़
उसका मस्तिष्क एक है
लेकिन बोलती है अठारह भाषाएँ।'

भारती बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि मनुष्य बनने के लिए सिर्फ ज्ञान काफी नहीं है। सच्चा मनुष्य वही है जो अपनी आत्मा को देश के लिए समर्पित कर देता है।

(2)

महाकवि चिन्नस्वामी सुब्रह्मण्य भारती ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस को चेताया। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता की भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में जो स्थान भारतेंदु हरिश्चंद्र का है, वही स्थान तेलुगु साहित्य में कंदुकूरि वीरेशलिंगम पंतुलु और तमिल साहित्य में सुब्रह्मण्य भारती का है। निज भाषा उन्नति के लिए इन्होंने उल्लेखनीय काम किया है।

सुब्रह्मण्य भारती के पिता चिन्नस्वामी अय्यर तमिल, अंग्रेजी भाषाओं पर समान अधिकार रखते थे। वे गणित और तर्क शास्त्र के प्रखांड विद्वान थे। रोजगार की तलाश में वे शिवपेरी से एट्टयापुरम गए। वे तकनीकी क्षेत्र के भी ज्ञाता थे। अतः 1880 में उन्होंने एट्टयापुरम में एक कपड़े की मिल खड़ी कर दी। उनका विवाह लक्ष्मी अम्माल से हुआ। उनकी पहली संतान का जन्म 11 दिसंबर, 1882 को एट्टयापुरम में हुआ था। उसका नाम सुब्रह्मण्यम रखा गया। प्यार से उन्हें सब सुब्बय्या कहकर पुकारते थे। वे घर-परिवार में हर किसीका लाड़ला रहा। वे बचपन से ही तेज थे। वस्तुतः स्कूल की पारंपरिक शिक्षा में उनके रुचि नहीं थी। वे अधिक समय खेलकूद में ही व्यतीत करते थे। तुकबंदियाँ करते थे। बचपन में अपने पिता की सख्ती के कारण वे एकांतप्रिय बन गए। उन्होंने अपनी आत्मकथा में यह कहा कि इस अकेलेपन को अपने भीतर की दुनिया को खोजने के लिए उन्होंने भरपूर इस्तेमाल किया था। यह वही समय था जब काव्य सृजन की ओर वे बढ़ने लगे -

'जिस तरह से प्यार करने वाले दो पंछी
वन में सुखी हों
या देवी और देवता
लौकिक खुशी से परे
एक आनंद में डूबे
अपने प्यार से बेसुध हों
उसी तरह मैंने अपने वे स्वर्गिक दिन
उस मधु-मधुकर के साथ बिताए।' (सुब्रह्मण्य भारती (1969) नंदकुमार प्रेमा, पृ. 5)

सुब्बय्या के पिता अपने बेटे को अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा देना चाहते थे। लेकिन यह सुब्बय्या को पसंद नहीं था। इसीलिए रुष्ट होकर लिखते हैं -

'मेरे पिता ने आदेश दिया
कि मैं नेल्लई में विदेशी ज्ञान प्राप्त करूँ।
यह वैसा ही था
जैसे किसी शेर के बच्चे को
घास दी जा रही हो।' (वही, पृ. 6)।

मैट्रिक्युलेशन परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के कारण वे एट्टयापुरम वापस आ गए। पिता के स्वप्न दिवास्वप्न में बदल गया। लेकिन सुब्बय्या मन ही मन खुश थे क्योंकि विदेशी शिक्षा के कारण बर्बाद होने से वे बाल-बाल जो बचे। उनके पिता ने उन्हें एट्टयापुरम रियासत की सेवा में लगा दिए। उन्हें तमिल के साथ-साथ अंग्रेजी पर समान अधिकार था। दोनों भाषाओं में कविता करते थे। तेज और प्रतिभाशाली होने के कारण वे जल्दी ही राजा के प्रीतिपात्र बने। स्पष्टवादी होने के कारण उनके शत्रु भी पैदा हो गए। एक दिन उनके शत्रुओं ने उन्हें भरी सभा में चुनौती दी। वाद-विवाद प्रतियोग्ता में सुब्बय्या ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और सबको आश्चर्य में डुबो दिया। उसी के बाद उन्हें 'भारती' की उपाधि मिली। भारती अर्थात माँ सरस्वती। साहित्य जगत में वे 'भारती' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

विवाहोपरांत भारती उच्च शिक्षा के लिए बनारस गए। बनारस प्रवास के समय अध्यात्म और राष्ट्रप्रेम से उनका साक्षात्कार हुआ। समाज में व्याप्त विसंगतियों के प्रति वे जागरूक थे। जातिप्रथा के विरुद्ध उन्होंने बिगुल बजाया था। उनकी प्रमुख रचनाओं में स्वदेश गीदंगल (स्वदेश गीत), जन्मभूमि, कुयिल पट्टु (कोयल के गीत), कण्णन् पाट्टु (कृष्ण के गीत), देसिया गीदंगल (देशभक्ति गीत), पांचाली शपथम (पांचाली शपथ) आदि उल्लेखनीय हैं।

भारती की रचनाओं में पग-पग पर देशप्रेम को देखा जा सकता है। 'यह देश है हमारा' शीर्षक कविता में वे हुंकार भरते हुए कहते हैं -

'विघ्नों का दल चढ़ आए तो, उन्हें देख भयभीत न होंगे,
अब न रहेंगे दलित-दीन हम, कहीं किसी से हीन न होंगे,
क्षुद्र स्वार्थ की ख़ातिर हम तो, कभी न ओछे कर्म करेंगे,
पुण्यभूमि यह भारत माता, जग की हम तो भीख न लेंगे।'

भारती जातिवाद का खंडन करते हैं। 'वन्देमातरम' शीर्षक कविता में उन्होंने यह गुहार लगाया कि 'ऊँच-नीच का भेद कोई हम नहीं मानते,/ जाति-धर्म को भी हम नहीं जानते।/ ब्राह्मण हो या कोई और, पर मनुष्य महान है/ इस धरती के पुत्र को हम पहचानते। आओ गाएँ 'वंदेमातरम'।/ भारत माँ की वंदना करें हम।/ वे छोटी जाति वाले क्यों हैं? क्यों तुम उन्हें कहते अछूत?/ इसी देश के वासी हैं वे, यही वतन, यहीं उनका वज़ूद/ चीनियों की तरह वे, क्या लगते हैं तुम्हें विदेशी?/ क्या हैं वे पराए हमसे, नहीं, हमारे भाई स्वदेशी?'

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही भारती ने स्वतंत्र भारत की परिकल्पना की। उन्होंने मुक्तकंठ से कहा – 'नाचेंगे हम आनंदमगन हो नाचेंगे/ आनंद स्वराज मिला हमको, हम नाचेंगे/ नाचेंगे हम आनंदमगन हो नाचेंगे/ दिन बीत गया है, ब्राह्मण को प्रभु कहने का/ गोरे फिरंगियों को हुजूर भी कहने का।'

भारती अपनी एक कविता में जहाँ जर्जर भारत को दूर जाने के लिए कहते हैं वहीं नवभारत को आने के लिए आह्वान करते हैं – 'ओ दुर्बल कन्धोंवाले, भारत!/ जा जा जा, जा तू भाग!/ ओ दबे हुए सीनेवाले, भारत!/ जा जा जा, जा तू भाग! .... आ आ आ, आ तू आ!/ मनमोहक वाणीवाले भारत आ!/ आ आ आ, आ तू आ!/ ताक़तवर कन्धोंवाले भारत आ!'

प्रकृति के निकट रहना भारती को बचपन से ही पसंद था। उनकी कविताओं में सिर्फ राष्ट्रप्रेम ही नहीं बल्कि रम्य प्रकृति और आदर्श को भी देखा जा सकता है। उन्होंने समूचे भारत को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया था। उत्तर-दक्षिण के बीच सेतु निर्माण करके भारती ने 'भारतीयता' को स्थापित किया। अतः भारत सरकार ने उनकी जयंती (11 दिसंबर) को भारतीय भाषा दिवस (भारतीय भाषा उत्सव) के रूप में मनाने की घोषणा की। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों के तहत छात्रों को भारतीय भाषाओं की जानकारी देना, अन्य भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करना है। ऐसा करने से निस्संदेह भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को कायम रखा जा सकता है। हमारी भारतीयता अक्षुण्ण रहेगी।

'भारतीय भाषा 'उत्सव' के अवसर पर भारती की कविता के माध्यम से ही उन्हें याद करेंगें –
निर्भय, निर्भय, निर्भय!
चाहे पूरी दुनिया हमारे विरुद्ध हो जाए,
निर्भय, निर्भय, निर्भय!
चाहे हमें अपशब्द कहे कोई, चाहे हमें ठुकराए,
निर्भय, निर्भय, निर्भय!
चाहे हम से छीन ली जाएँ जीवन की सुविधाएँ
निर्भय, निर्भय, निर्भय!
चाहे हमें संगी-साथी ही विष देने लग जाएँ
निर्भय, निर्भय, निर्भय!
चाहे सर पर आसमान ही क्यों न फटने लग जाए
निर्भय, निर्भय, निर्भय!